www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्याय मण्डल प्रज्ञा संस्थान और प्रज्ञा केन्द्र

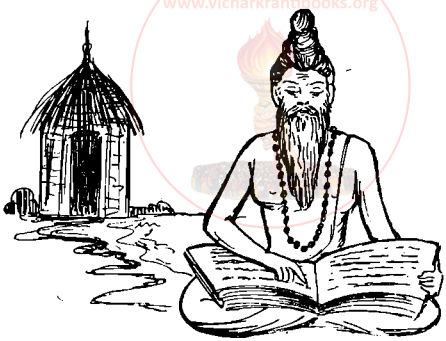

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा संस्थान और प्रज्ञा केन्द्र

★★

भव्य भवन थोड़े से या झोंपड़े बहुत से इन दोनों में से एक का चयन जन कल्याण की दृष्टि से करना है तो बहुलता वाली बात को प्रधानता देनी पड़ेगी। राम के रीछ-बानर—कृष्ण के ग्वालबाल—शिव के भूत—पलीत वाले चयन का उद्देश्य समझने पर तथ्य स्पष्ट होता है कि बहुजन सुखाय—बहुजन हिताय-की नीति ही वरिष्ठ है। विद्वानों को निष्णात बनाने में भी हर्ज नहीं पर निरक्षरों को साक्षर बनाना ही लोक हित की दृष्टि से प्रमुखता पाने योग्य ठहरता है।

विशाल काय गायत्री शक्तिपीठों और बड़े प्रज्ञा पीठों को अब क्षेत्रीय गतिविधियों का मध्य केन्द्र बना कर चला जायगा। वे अपने अपने मंडलों के केन्द्रीय कार्यालय रहेंगे। हर गांव मुहल्ले में सृजन और सुधार व्यवस्था के लिए बिना इमारत के स्वाध्याय मंडल—प्रज्ञा संस्थान ही प्रमुख भूमिका सम्पन्न करेंगे। विशाल काय समारोहों की व्यवस्था दूर दूर से जन समुदाय एकत्रित करके उत्साह उत्पन्न करने की दृष्टि से आवश्यक है पर जब जन जन से सम्पर्क साधने और घर घर का द्वार खट खटाने की आवश्यकता पड़ी तो निजी परिवार जैसे छोटे विचार परिवार ही काम देते हैं। इस प्रयोजन की पूर्ति स्वाध्याय मंडल ही कर सकते हैं।

एक अध्यापक प्रायः तीस छात्रों तक को पढ़ाने में समर्थ हो पाता है। स्वाध्याय मंडली को एक अध्यापक माना गया है और संस्थापक को चार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य भागीदारों की सहायता से एक छोटे विचार परिवार का गठन करके युगान्तरीय चेतना से उस समुदाय को अवगत अनुप्राणित करने के लिए कहा गया है। यही है स्वाध्याय मंडलों का संगठन।

प्रज्ञा परिजनों में से जिनमें भी प्रतिभा कर्मठता, साहसिकता हो उसे इसी स्वाध्याय संगठना में तत्काल नियोजित करना चाहिए। इसमें उनकी एकाकी सृजन शक्ति को प्रकट प्रखर होने का अवसर मिलेगा। बड़े संगठनों में आये दिन खींच तान और दोषारोपण के झंझट चलते हैं। निजी सम्पर्क और निजी प्रयत्न से एक प्रकार का निजी विचार परिवार बना लेने में किसी प्रकार के विग्रह की आशंका नहीं है। हर दम्पति अपना नया परिवार बनाता और नया वंश चलाता है। प्रज्ञा परिजनों में से जो भी मानसिक बौनेपन से बढ़कर प्रौढ़ता परिपक्वता की स्थिति तक पहुँच चुके हैं उन्हें अपने निजी पुरुषार्थ का विशिष्ठ परिचय देना चाहिए। हर पक्षी प्रौढ़ होने पर अपना एक नया घोंसला बनाता है।

स्वाध्याय मंडल के संस्थापन संचालन की प्रक्रिया बहुत ही सरल है। इस सृजन के लिए जिसकी भी श्रद्धा उमगे उसे अपने प्रभाव क्षेत्र के और अपने जैसी प्रकृति के चार साथी ढूंढ निकालने चाहिए। पांच की संचालक मंडली गठित करनी चाहिए। इन पांच पाण्डवों में से प्रत्येक को बीस बीस पैसा नित्य अंशदान और न्यूनतम एक घंटा समयदान करते रहने के लिए सहमत करना चाहिए इतनी भर पूँजी जुटाने पर स्वाध्याय मंडलकी निर्धारित गतिविधियां निर्बाध रूप से चल पड़ेंगी।

प्रमुख कार्यक्रम प्रज्ञा साहित्य का सम्पर्क क्षेत्र के लोगों को नियमित स्वाध्याय कराना है। संगठन का नाम करण इसी प्रमुख कार्यक्रम के आधार पर किया गया है। आयुर्वेद में औषधियों के नामकरण उनमें पड़नेवाले द्रव्यों में से जो प्रमुख होता है उसके आधार पर किया जाता है द्राक्षासव अमृतारिष्ठ लवंगादिवटी, सितोपलादि चूर्ण, हींग आदि में अगदि जिस प्रकार प्रमुख द्रव्य की चर्चा है उसी प्रकार विचार क्रान्ति के लिए स्वाध्याय को सीधी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गहरा प्रभाव छोड़ने वाली प्रक्रिया माना गया है और इन संगठनों को इसी कार्यक्रमको सर्व प्रधान मानने के लिए कहा गया है।

पांच व्यक्तियों की बीस बीस पैसे वाली सम्मलित राशि माह में तीस रुपया बनती है। इतने का प्रज्ञा साहित्य युग निर्माण योजना से हर महीने मंगाते रहा जाय। यही है मंडल की स्थायी सम्पदा प्रज्ञा पुस्तकालय के रूप में इसी पैसे से संगठन की प्राणवान पूँजी निरन्तर बढ़ती रहेगी और उससे धीरे धीरे सहस्रों व्यक्ति लाभान्वित हो सकेंगे।

संचालक मंडली के पांच सदस्यों में से प्रत्येक को अपने परिवार सम्पर्क के पांच पांच ऐसे व्यक्ति ढूंढ़ने चाहिए जिनकी स्वाध्यायमें विचार शीलता में रुचि है अथवा पैदा की जासके। इस प्रकार पांच सदस्यों की—पांच पांच की मंडली से तीस सदस्य हो जाते हैं। तीस फूलों का यह हार यदि युग देवता के गले में पड़ सके तो अपनी गरिमा और देवता की शोभा बढ़ाने में पूरी तरह सफल हो सकता है। पाँचों संचालक अपनी अपनी क्यारियों को ठीक तरह संभालें संजोये। उन तक नियमित रूपसे घर बैठे बिना मूल्य प्रज्ञा सहित्य पहुँचाने और वापिस लेने के व्रत निर्वाह का प्रथम चरण इतने भर से पूरा हो जाता है।

सर्व विदित है कि कार्लमार्क्स के विचारों ने एक शताब्दी के भीतर प्रायः आधी दुनियाँ को अपने विचारों में समेट लिया। रूसो के प्रतिपादन से प्रजातंत्र की जड़ जमी। ईसाई पादरियों ने विश्व के कोने कोने में अपने धर्म की विशेषता समझाई? प्रायः दो तिहाई मनुष्य जाति को कुछ ही शताब्दियों के अन्दर ईसाई धर्मावलम्बी बना लिया। अमेरिका में से दास प्रथा समाप्त करने का बहुत कुछ श्रेय हैरियट स्टो को जाता है। बुद्ध और गान्धी ने अपने अपने समय के विचार क्रान्ति प्रतिपादनों को जन जन को परिचित करा सकने के कारण ही सफल बनाया था। इतिहास साक्षी है कि बन्दूक की तुलना में प्राणवान विचारों की सामर्थ कहीं अधिक समर्थ सिद्ध हुई है। जब सभी लोग बिना पढ़े थे तब नारद की तरह वाणी ही प्रमुख सामर्थ्य थी पर जब से शिक्षा का—प्रेस का साहित्य का विस्तार हुआ है तबसे वाणी की तुलना में अधिक स्थायी अधिक गंभीर अधिक प्रभावी विचार देने में लेखनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की—साहित्य की-शक्ति ही विश्व की सब से बड़ी सामर्थ्य बन कर उभरी है।

अपने समय में विचार क्षेत्र की भ्रान्तियाँ और विकृतियाँ ही लोक चिन्तन को भ्रष्ट और आचारण प्रचलन को दुष्ट बनाने केलिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं। अन्यथा विज्ञान शिक्षा और उद्योग क्षेत्र की वर्तमान प्रगति के रहते मनुष्य हर दृष्टि सेसुखी सम्पन्नरह सकता था। आस्था संकट ही अपने समय का सबसे बड़ा विग्रह है उसी ने व्यक्ति और समाज के संमुख अगणित समस्याएं विपत्तियाँ और विभीषिकायें खड़ी की हैं। समाधान के लिए प्रचलित सुधार इसी से सफल नहीं हो पाते कि भावनाओं मान्यताओं विचारणाओं आकांक्षाओं में सुधार परिष्कारका प्रयत्न नहीं हुआ। मात्र अनाचारों के दमन सुधार की बात सोची जाती रही। सड़ी कीचड़ यथा स्थान बनी रहे तो मक्खी मच्छर पकड़ने मारने पीटने से क्या काम बने। रक्त में विषाक्तता भरी रहे तो फुन्सियों पर मरहम लगाने भर से क्या बात बने। एक सुधार पूरा होने से पूर्व ही सौ नये बिगाड उठें तो चिरस्थायी सुधार की संभावना नहीं रहेगी।

अपने समय को समस्त समस्याओं का एक ही हल है विचार क्रान्ति अभियान लोक मानस का परिष्कार। इसके लिए स्वाध्याय और संत्सग की ढाल तलवार का प्रयोग करना होगा। युगान्तरीय चेतना का प्रतिनिधित्व प्रज्ञा साहित्य करता है। उसे पढ़ने पढ़ाने की प्रक्रिया यदि द्रुतगामी बनाई जासके तो अब तक चल रही प्रगति में तूफानी उभार आ सकता है। नगण्य से साधनों पर पिछले दिनों २४ लाख व्यक्तियों का प्राण वान देव परिवार खड़ा किया जा सका है तो कोई कारण नहीं कि उसी कार्य को व्यवस्थित प्रज्ञासंस्थान संभाल लें तो देखते देखते जन जागरण की प्रक्रिया को सैकड़ों गुनी अधिक प्रचंड बनाया जा सकेगा। देखने में यह छोटा सा उपचार कितना महत्व पूर्ण है उसका संदर्भ घने अंधकार से निपटने में छोटे से दीपक की भूमिका से समझा समझाया जा सकता है।

स्वाध्याय मंडल प्रज्ञा संस्थानों को भी बड़े प्रज्ञा पीठों के लिए निर्धारित कार्य पद्धति अपनानी होगी। जन जागरण के लिएजन सम्पर्क जन सम्पर्क से जन समर्थन और सहयोग मिलने, उस आधार पर युग परिवर्तन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का ढांचा खड़ा होने कासर जाम जुटने की बात बार बार कही जाती रही है। इस प्रयोजन के लिए प्रज्ञा साहित्य का पठन पाठन और दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन की प्रक्रिया को स्वाध्याय कहा जा सकता है। प्रज्ञा पीठों की पंच सूत्री योजना में सत्संग को व्यापक बनाने के लिए (१) स्लाइड प्रोजक्टर (२) टेपरिकार्डर (३) प्रदर्शनी (४) जन्म दिवसोत्सवों को प्रमुखता दी गई है। इनके माध्यम से एक व्यक्ति भी सैकड़ोंको हर दिन युग चेतना से अवगत अनुप्राणित करते रहने की प्रक्रिया नियमत रूप से चलाता रह सकता है।

स्वाध्याय क्रम के पैर जमते ही सभी प्रज्ञा सस्थानों को उपरोक्त कार्य पद्धति हाथ में लेनी चाहिए। उसके लिए साधन जुटाने चाहिए। हर प्रज्ञा सस्थान को स्वाध्याय शुमारंभ करके अग्रिम चरणों में सृजनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रम हाथ में लेने होंगे, इसके लिए दस सूत्री योजना की चर्चा होती रही है उनमें से चार तो ऐसे है जिन्हें छोटे प्रज्ञा संस्थान भी अपने न्यून तम ३० सदस्यों की परिधि में कार्यान्वित कर सकते हैं। प्रौढ़ शिक्षा, बाल संस्कार शाला, व्यायाम शाला, खेल कूद, तुलसी आरोपण हरितमा संवर्धन। शादियोंमें दहेज और धूम-धामका विरोध इन चार कार्यक्रमोंमें जन-जन को भागीदार बनाने का कार्य स्वाध्याय मंडलों को अपने तीस सदस्यों के परिवार से आरंभ करना चाहिए। इन कार्यक्रमों के सहारे यह छोटे संगठन भी अपनी गौरव गरिमा का परिचय देंगे। जन जन का समर्थन सहयोग प्राप्त करेंगे और बीज से वृक्ष, चिनगारी से दावानल का नया उदाहरण बनेंगे।

स्वाध्यय के दो और सत्संग के चार चरण मिल कर छै बनते हैं। अगले दिनों हर मंडल को पर्व आयोजनों नव रात्रि सत्रों और वार्षिकोत्सवों की व्यवस्था बनानी होगी। इन सब कार्यों के लिए साधन जुटाने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती रहेगी इसका सरल और स्थायी रूप ज्ञान घट ही हो सकते हैं। प्रज्ञा परिवार को सदस्यता के लिए एक घण्टा समयदान और बीस पैसे की अंश दान नित्य नियामत रूप से करते रहने की शर्त है। ऐसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्चे प्रज्ञा परिवार विनिमत करने चाहिए जो बातों के बताशे ही न बनाते रहें वरन् श्रद्धा का प्रमाण परिचय देने वाला भाव भरा अनुदान भी प्रस्तुत करें। बीस पैसे वाले ज्ञान घट पुरुषों के और एक मुट्ठी अनाज वाले धर्म घट महिलाओं के द्वारा चलें तो प्रज्ञा संस्थानों को अगले दिनों जो कतिपय नये उपकरण खरीदने तथा नये कार्य क्रम चलाने होंगे उनके लिए समयानुसार पैसा मिलता रहेगा। इस न्यूनतम अनिवार्य अंश दान के अतिरिक्त उदार मना परिजनों से कुछ अधिक खर्च करने की बात भी गले उतारनी चाहिए। ताकि स्वाध्याय मंडल प्रज्ञा संस्थान साहित्य पढ़ाने के प्रथम चरण तक ही न सीमित रहे। वर्ण माला और गिनती पहाड़ा ही न रटता रहे। अन्ततः इन छोटे संगठनों को विकसित होना है। हर सदस्यको एक से पांच" की विकाश विस्तार प्रक्रिया को कार्यान्वित करना है। नव जात शिशु तो खिलौनों से खेलता और गोदी में चढ़ता रहता है पर समय बीतने पर वह किशोर और प्रौढ़ भी तो बनता है। तदनुसार उसकी गति विधियां भी भारी भरकम बनती चली जाती है।

स्वाध्याय मंडल प्रज्ञा संस्थान की समर्थता पांच साथियों का सहयोग प्राप्त करने और तीस का कार्यक्षेत्र बनाने की विधि व्यवस्था पर अवलम्बित माना गया है। किसी भी प्रतिभा शालीके लिए इतनी संगठना और योजना चला सकना कठिन नहीं पड़ना चाहिए। इतने पर भी यह हो सकता है कि कोई नितान्त व्यस्त, संकोची, रुग्ण, अविकसित असमर्थ एवं महिलाओं की तरह प्रतिबंधित होने की स्थिति में संगठन क्रम न चला सके। उन्हें भी मन मसोस कर बैठने की आवश्यकता नहीं है। उनके लिए एकाकी प्रयत्न से चल सकने वाली 'प्रज्ञा केन्द्र' व्यवस्था का प्रावधान रखा गया है। इसमें संगठित प्रयत्न के बिना भी एकाकी प्रयास से काम चल सकता है। ऐसे लोग बीस पैसे के स्थान पर अपनी तथा कुटुम्बियों की ओर से चालीस पैसा प्रतिदिन की व्यवस्था करे। और उतने भर से हर महीने प्रकाशित होने वाली तीस फोल्डर पुस्तिकाएँ मंगाये और परिवार पड़ोस के बारह व्यक्तियों को उन्हें पढ़ाते सुनाते रहें। इस प्रकार भी प्रज्ञा पीठ–प्रज्ञा संस्थान वाली प्रक्रिया का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एकाकी स्तर पर निर्वाह हो जाता है। इस आधार पर घरेलू प्रज्ञा पुस्तकालय बनता और बढ़ता रह सकता है।

स्मरण रहे प्रज्ञा संस्थानों और प्रज्ञा केन्द्र द्वारा पढ़ाने के लिए खरीदा गया साहित्य उन्हीं की पूँजी के रूपमें उन्ही के पास रहता है। कोई चाहे तो लागत से थोड़े कम मूल्य में किसी भी दिन कहीं भी बेच भी सकता है। अस्तु यह दान नही। सम्पदा संचय है। ऐसी सम्पदा जिसे सोने चांदी की तुलना में कहीं अधिक श्रेय स्कर एवं सत्परिणाम उत्पन्न करने वाली कहा जा सकता है। हर विचार शील को अपने निजी परिवार को सुसंस्कारी बनाने के लिए इस संचय को करना ही चाहिए।

प्रज्ञा केन्द्र, प्रज्ञा संस्थान प्रज्ञा पीठ के गठनका कोई भी स्वरूप क्योंन हो उसे चलाने वाले आनायास ही विचारशीलों के सम्पर्क में आते हैं, उनके साथ घनिष्ठता स्थापित करते, सहानुभूति अर्पित करते और मित्रता करते हैं। यह उपलब्धि आरंभ में तो कम महत्वकी दीखती है पर जब आनेवालेसमय में उन मित्रों के सहयोग से विपत्ति निवारण और प्रगति लाभ के सुयोग बनते हैं तब प्रतीत होता है कि इस सेवा साधना में जो श्रम समय एवं पैसा लगा वह अनेक गुना होकर बापिस लौटने लगा। विचार शीलों की सद्भावना एवं घनिष्ठता उपलब्ध करने वाले प्रकारान्तर से सुखद वर्तमान एवं उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते और अनुदान का प्रतिदान हाथों हाथ प्राप्त करते हैं।

का० १०६/प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org